मालती जोशी के कथा-साहित्य में नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व

आज का हिन्दी कथा साहित्य विश्व के किसी भी कथा साहित्य के सम्मुख रखा जा सकता है। इस विधा के तहत समाज की यथार्थ स्थिति सरल एवं मनोरंजक रूप में उजागर होती है। विषय विविधता एवं कलात्मक प्रौढ़ता की दृष्टि से प्रेमचन्द ने हिन्दी कथा साहित्य को गरिमा प्रदान की थी। प्रेमचन्द युग देश की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक दृष्टि से उथल-पुथल का ज़माना था। उन्होंने तत्कालीन समाज में प्रचलित बालविवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा समस्या, अंधविश्वास और अन्धरूढ़ियों को अपने सृजन का साधन बनाया। इस संदर्भ में चारों ओर से शोषित, उत्पीड़ित, उपेक्षित, दमित नारी भी पुरुष के समकक्ष अपने अधिकार माँगने लगी। इस दौरान समाज में प्रचलित दहेज प्रथा, बालविवाह, अशिक्षा, बेकारी, धार्मिक कट्टरपन, रूढ़िवाद, पारिवारिक विघटन आदि नारी संबन्धी समस्याओं को ग्रहण करने में हिन्दी की महिला रचनाकार भी सक्षम हुई। इनमें उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, मालती जोशी आदि का प्रदेय महत्वपूर्ण है। आलोच्य लेखिका मालती जोशी जी ने भी नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व के सूक्ष्म विवेचन से महिला लेखन को संपुष्ट बनाया। उन्होंने 'एक सार्थक दिन' कहानी से लेकर 'दर्द का रिश्ता' तक की लंबी यात्रा तय की। ये कहानियाँ नारी जीवन के संघर्ष, संकट, अकुलाहट एवं अन्तर्द्वन्द्व के सूक्ष्म आकलन अवलोकन से पूर्ण है। उनके 'राग-विराग' और 'पटाक्षेप' उपन्यास भी नारी जीवन की बहुमुखी समस्याओं से ओतप्रोत है। अतः मालती जी के कथा साहित्य में उभरते नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व की पहचान परख इस शोध प्रबन्ध का प्रदेय है।

प्रथम अध्याय
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी संवेदना

यह अध्याय स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में उभरती नारी संवेदना की पहचान परख से संबन्धित है। इस युग की अधिकांश रचनाएँ नारी मन के अतिसूक्ष्म एवं रहस्यभरी परतों के आकलन से संपुष्ट है। आज़ादोत्तर हिन्दी उपन्यास विधवा नारी की दुर्दशा, दहेज प्रथा की कठोरता और धार्मिक कट्टरपन से त्रसित नारी जीवन का परिदृश्य है। इस युग में शिक्षा के तेज़ रफ़्तार से सुशिक्षित नारी घर की चहार दीवारी लाँघने लगी। अपनी अस्मिता के प्रति सचेत नारी अन्धरूढ़ियों को नकारकर नौकरी करने लगी। लेकिन यहाँ नारी को अधिकारियों और नौकरशाही से मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। यहाँ नारी पति का अविश्वास, बच्चों से अलगाव और स्वास्थ्य संबन्धी समस्याओं का शिकार बनी। अतः घर और बाहर के दोहरी संघर्ष से त्रस्त नारी जीवन की सूक्ष्माभिव्यक्ति इस काल के उपन्यासों का मुद्दा रहा। आलोच्यकालीन महिलाएँ परंपरागत नैतिक प्रतिमानों पर ठेस पहूँचाने में समर्थ हुई। मन्नु भंडारी के 'आपका बंटी'; प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता'; नासिरा शर्मा के 'शालमली'; कृष्णा अग्निहोत्री के 'निलोफर' और ममता कालिया के बेघर में दाम्पत्य जीवन के बिखराव, घुटन, कुंठा तथा तनाव की विशाल फलक पर विश्लेषण प्राप्त है। कृष्णा अग्निहोत्री के 'अभिषेक'; 'नीलोफर' और

'बात एक औरत की'; उषा प्रियंवदा के 'पचपन खम्भे लाल दीवारे'; ममता कालिया के 'बेघर'; चित्रा मुद्गल के 'एक ज़मीन अपनी'; नासिरा शर्मा के 'ठीकरे की मंगनी' में नौकरी पेशा नारी की घुटनभरी ज़िन्दगी झलक उठती है। नासिरा शर्मा के 'जिन्दा मुहावरे' और मन्नु भंडारी के 'स्वामी' में दहेज प्रथा से पीड़ित नारी जीवन विद्यमान है। सारतः आज़ादोत्तर हिन्दी उपन्यासों में नारी जीवन के वैयक्तिक, सामाजिक, धार्मिक एवं पारिवारिक माहौल की झलक पाई जाती है।

द्वितीय अध्याय
मालती जोशी की रचना धर्मिता

मालती जी मध्यवर्गीय परिवस्थों से बने सीधे-सादे कर्मठ इनसान का प्रतीक है। यहाँ हिन्दी तथा मराठी साहित्य के प्रबल हस्तक्षर मालती जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सरसरी दृष्टि डाली गई है। मराठी के वरिष्ठ लेखिका मालती दांडेकर और शरद जी से प्रणीत मालती जोशी का साहित्य क्षेत्र में पदार्पण स्वाभाविक रूप में हुआ। मध्यवर्गीय परिवार में पली बढ़ी और ब्याही मालती जी का संपूर्ण जीवन बहुमुखी संघर्षों और अभावों से युक्त था। अतः इस द्वन्द्वयुक्त जीवन की झलक आपकी रचनाओं में पाई जाती है।

मालती जी को पिताजी के तबादलों के तहत मतवार, लटार, सुनसेर और मुंगावली गावों में ठहरने का सुअवसर प्राप्त था। इसी दौरान प्रणीत ग्रामीण चेतना ने मालती जी की रचनाओं को सप्राण बनाया है। अतः मालती जी का रचना संसार निजी अनुभवों एवं अनुभूतियों से प्रणीत है। प्रारंभ में मालती जी को शिवमंगल सिंह सुमन से प्रेरणा और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। उनकी रचनाएँ निरन्तर परिवर्तित एवं परिमार्जित होने की गवाही देती है। परंपरागत सामाजिक अन्धरूढ़ियों के निर्वाह के मार्फत नारी घर-परिवार में अपने अधिकारों से वंचित थी। लेकिन आज की सुशिक्षित नौकरी पेशा नारी अपने अधिकारों की माँग करने लगी है। मालती जी के 'सहचारिणी' की नीलम और 'राग-विराग' की कल्याणी

इसका स्पष्ट परिचायक है। पति की उपेक्षा एवम् दुराचरण से तलाक की ओर बढ़ने में विवश नारी की व्यथा 'सहचारिणी' की नीलम और 'राग-विराग' की कल्याणी में विद्यमान है। कविता, कहानी, उपन्यास, बालसाहित्य आदि विधाओं ने भी मालती जी की सृजन प्रक्रिया में अहम भूमिका अदा की है। अतः मालती जी का संपूर्ण साहित्य नारी जीवन की अस्मिता की खोज करने में सक्षम है।

तृतीय अध्याय
मालती जोशी के कथा साहित्य में नारी जीवन की संवेदना

तृतीय अध्याय मालती जी के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित नारी जीवन की संवेदना से संबन्धित है। प्रेम की कोमल संवेदना की मनोरम अभिव्यंजना उनके कथा साहित्य की अहमियत है। लेकिन संबन्धों का टूटन, शिथिल दाम्पत्य संबन्ध, विरोध-अविरोध और लगाव-अलगाव के सटीक समावेश से भी उनकी रचनाएं परिपूर्ण है। अर्थाभाव से परेशान तथा प्रेमाभाव से तड़पती पत्नी की यथातथ्य अवधारणा से मालती जी की रचनाएँ संपन्न है। शिथिल दाम्पत्य जीवन से त्रसित नारी की मनोव्यथा का सूक्ष्म विश्लेषण 'सहचारिणी'; 'राग-विराग'; 'पटाक्षेप'; और 'परंपरा' के नारी पात्रों में विद्यमान है। रूढि परंपरा से निसृत तनाव की त्रासदायक स्थिति 'पटाक्षेप' और 'परंपरा में विद्यमान है। मातृत्व से वंचित नारी मन का अन्तर्द्वन्द्व 'राग-विराग' की कल्याणी में ज़ाहिर है। परित्यक्ता नारी की दर्दनाक ज़िन्दगी की पहचान 'एक घर सपनों का'; 'ऊब'; 'सहचारिणी' और 'राग-विराग' में प्राप्त है। 'पटाक्षेप' की पद्मा और 'राग-विराग' की कल्याणी कुरूप होने से मानसिक द्वन्द्व झेलने को विवश है। अतः नारी जीवन की कमनीयता, विवशता एवम् विषमताओं के संगोपांग आकलन से मालती जोशी जी की रचनाएँ संपूर्ण है।

चतुर्थ अध्याय
मालती जोशी के कथा साहित्य में नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व

मालती जोशी जी के कथा साहित्य में सतत संघर्षशील नारी जीवन ने प्रतिष्ठा पायी है। उनकी सृजन-शीलता ने आज़ादोत्तर मध्यवर्गीय नारी जीवन के बहुमुखी पक्षों को उभारा है। उनके संपूर्ण कथा साहित्य में शोषित एवम् उत्पीड़ित नारी की दर्दभरी जीवनगाथा झलक उठती है। अर्थाभाव, अशिक्षा, बेकारी और दहेज प्रथा से उत्पीड़ित नारी की मनोव्यथा ने उनकी रचनाओं को सप्राण बनाये है। अनमेल विवाह से उपजी तनावग्रस्त मनस्थिति की अवधारणा 'स्मृति कल्प' की शोभा; 'रेतमहल की मीरा और 'गणित' की सीमा में हुई है। उनके 'सहचारिणी' की नीलम; 'राग-विराग' की कल्याणी; 'पटाक्षेप' की पद्मा दाम्पत्य जीवन के बिखराव, अलगाव और प्रेमाभाव की परेशानी से भी कराह उठती हैं। अतः मालती जी के 'पटाक्षेप' 'सहचारिणी'; मन ना भये दस बीस; और 'बोल री कठपुतली' नारी जीवन की कुंठा, घुटन, तनाव एवं संघर्षभरी जीवनगाथा का मूर्तरूप है। 'पटाक्षेप' की पद्मा; 'राग-विराग' की कल्याणी और 'हमको दियो परदेस' की कुसुम दाम्पत्य जीवन के बिखराव से त्रासदायक जीवन बिताने को विवश नारी मन का परिचायक है। नौकरी के दौरान उभरते उलझन का सजीव आकलन 'बोल री कठपुतली'; 'पंख तौलती चिड़िया'; 'मध्यान्तर'; 'समर्पण का सुख' आदि में साफ ज़ाहिर है। असफल प्रेमविवाह की

त्रासदी का मर्मस्पर्शी स्वरूप 'आस्ताचल'; 'सहचारिणी'; 'राग-विराग'; 'कुहासे'; 'मैंने चाँद तारे तो नहीं माँगे थे' में प्राप्त है। 'बोल री कठपुतली'; 'मुक्तिपर्व'; 'छीना हुआ सुख'; 'निर्वासित कर दी तुमने मेरी प्रीति' में दहेजप्रथा की कठोरता दर्शनीय है। अनमेल विवाह से उद्‌भूत तनाव 'समर्पण का सुख'; 'गणित'; 'रेतमहल'; में दर्शाया गया है। पति वा परिजनों से उपेक्षा झेलने केलिए विवश नारी की रुदन 'चाँद अमावास का'; 'प्रतिरोध'; 'कबाड़'; 'बेघर'; 'क्षरण'; 'मेरे कत्ल में तुम्हारा हाथ था' कहानियों में अभिव्यंजित है। अतः मालती जी की संपूर्ण रचनाएँ नारी जीवन की बहुमुखी समस्याओं के विशद आकलन अवलोकन से पूर्ण हैं।

पंचम अध्याय
भाषा-शैली

शैली रचनाकार की विशिष्ट विद्यमानता का द्योतक है। मालती जी के कथा साहित्य में आत्मकथात्मक शैली, फ्लैशबैक शैली, पत्र शैली, वर्णनात्मक शैली, डायरी शैली एवं टेलिफोन संवाद शैली का सम्यक परिपाक हुआ है। देहाती शब्दों की भरमार ने मालती जी की रचनाओं को देदीप्यमान बनाये हैं। उनके 'सहचारिणी' और 'पटाक्षेप' उपन्यास आत्मकथात्मक शैली का द्योतक है। 'पटाक्षेप' डायरी शैली का उत्तम निदर्शन है। 'सहचारिणी' और 'विश्वासगाथा' में फ्लैशबैक शैली का प्रयोग बारीकी से हुआ है। 'विश्वासगाथा'; 'शोभायात्रा'; 'आश्वस्ति' में टेलिफोन संवाद शैली का परिपाक हुआ है। 'राग-विराग' और 'पाषाण युग' में संगीत संबन्धी शब्दों की भरमार है। 'पटाक्षेप'; 'महकते रिश्ते'; 'एक और देवदास' में देहाती वाणी का ओजस्वी प्रयोग हुआ है। मराठी, फारसी, तुर्की एवं अंग्रेज़ी शब्दों के सार्थक प्रयोग ने उनके कथा साहित्य को सप्राण बनाये हैं।

छठा अध्याय
उपसंहार

आधुनिक महिला रचनाकारों में मालती जोशी जी ने अपनी मौलिक सृजनशीलता की हैसियत से अहम ठहराव बनाया है। उन्होंने निजी अनुभूतियों को अपनी रचनाओं में संप्रेषित करने की भरसक कोशिश की। बिना किसी कृत्रिमता वा कोरी कलपना से नारी जीवन की ज्वलन्त समस्याओं का विश्लेषण उनके 'सहचारिणी'; 'पटाक्षेप'; 'बोल री कठपुतली'; 'मन ना भये दस बीस' में विद्यमान है। 'बोल री कठपुतली' की अमिता; 'मुक्तिपर्व' की रंजना; 'छीना हुआ सुख' की बुआ और 'निर्वासित कर दी तुमने मेरी प्रीति' की दिव्या दहेज प्रथा की कठोरता के शिकार नारी पात्र का परिचायक है। अनमेल विवाह से तनावभरा जीवन बिताने में विवश नारी की त्रासदायक स्थिति की झलक 'स्मृति कल्प' की शोभा; 'रेतमहल' की मीरा तथा 'समर्पण का सुख' की गीता में पायी जाती है। 'अतिक्रमण' की वसुधा और 'एक पल आस्था' की क्षमा में वैधव्य में अकेलेपन और अपमान का सामना करनेवाली नारी की दर्दभरी ज़िन्दगी उठायी गयी है। मालती जी के 'सहचारिणी' की नीलम; 'राग-विराग' की कल्याणी और 'पटाक्षेप' की पद्मा दाम्पत्य जीवन के बिखराव झेलती रहती है।

प्रखर जीवनानुभवों से प्रणीत मालती जोशी जी ने अपने निजी संवेदनात्मक भाषा-शैली का भी रुपायन किया है। तत्कालीन साहित्य क्षेत्र में प्रचलित आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, टेलिफोन संवाद शैली एवं

देहाती वाणी के समावेश ने उनकी रचनाओं को साकार बनाये हैं। अतः मालती जी की संपूर्ण रचनाएं उनके शैलीगत वैविध्य का परिचायक है। मराठी, फारसी, तुर्की एवं अंग्रेज़ी शब्दों के समुचित प्रयोग भाषा को अनोखी सर्जनात्मकता से भर देने में सक्षम है।

निस्संदेह कहा जा सकता है कि मालती जी का कथा साहित्य नारी जीवन की पीड़ा, त्रासदी और प्रतिरोध का महान दस्तावेज है। उन्होंने अपने कथा साहित्य के तहत सामाजिक रूढ़ि और रीति-रिवाज़ों को चुनौती दी थी। अतः मालती जी आधुनिक महिला रचनाकारों में शिखरस्थ स्थान के योग्य है। मालती जी ने नारी मन की परतों को खोलने में और उनके जीवन की अनेकविध समस्याओं के संगोपांग विवेचन में कमाल-हासिल की है। इस दृष्टि से मालती जी का कथा साहित्य राष्ट्रगिरा की अक्षयनिधि कहने लायक है।

Signature of Supervising Teacher:

Name & Designation of Supervising Teacher : Dr. K.M. MATHEW
Head
P.G. & Research Dept. of Hindi
St. Thomas College, Pala

Place: Pala
Date :